महात्मा गांधी एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन के आलोक में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन

आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी
मेरठ

शिक्षासंकाय के अंतर्गत

शिक्षाशास्त्र में पीएच.डी.

की उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ. प्रियंका बंसल
सहायक प्राध्यापक
शिक्षासंकाय
आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी

शोधकर्त्री
पूनम कुशवाहा
नामांकन संख्या
IIMTU/2171357

शिक्षा संकाय, आई0 आई0 एम0 टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ

2022

1. <u>प्रस्तावना</u>

महात्मा गांधी ने आज से 100 साल पहले ही नई शिक्षा नीति के सिद्धांतों और प्रणाली का सपना देखा था, जिसे आज के समय में पूरा किया जा रहा है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के द्वारा सत्य, अहिंसा और शान्ति का मार्ग प्रसस्थ किया। महात्मा गांधी ने शिक्षा के संग पर्यावरण पर भी बल दिया। नई शिक्षा नीति और पर्यावरण पर महात्मा गांधी के सिद्धांत आज सफल हो रहे हैं। इन्हीं सफलता से भारतीय समाज गतिशील बन रहा है और तकनिकी में रोज नई नई उपलब्धियों को हासिल कर रहा है। हाल के दशकों के बाद, भारत को एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली। नई शिक्षा नीति 2020, आधुनिक शैक्षिक विचारधाराओं और विचार प्रक्रिया के कई पहलुओं के अलावा शिक्षा पर गांधीवादी विचारों की याद दिलाती है। गांधीजी एक ऐसे प्रयोगवादी थे, जिन्होंने जीवन भर सत्य का साथ दिया। वह प्राचीन संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित थे। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बहुभाषावाद और भाषा, जीवन कौशल, नैतिकता और मानव संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच, बहुविषयक, समग्र शिक्षा आदि की शक्ति को बढ़ाने की क्षमता है।

गांधी जी के अनुसार, नई शिक्षा निति से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है। साक्षरता केवल शिक्षा प्रदान करने का साधन नहीं है, शिक्षा अपने आपको को बनाने का साधन है। शिक्षा में गांधीजी ने सबसे पहले व्यक्तिगत चरित्र के गठन पर जोर दिया। गांधी जी ने कहा था कि एक मजबूत चरित्र के बिना कोई भी जीवन के किसी भी क्षेत्र में विशिष्टता हासिल नहीं कर सकता है। चरित्र के निर्माण में व्यवहार, अहिंसा और सत्यता बहुत महत्वपूर्ण घटक होते हैं।
इसलिए नई शिक्षा निति में मातृभाषा भाषा और कौशल पर अधिक जोर दिया गया है। गांधी जी का मानना था कि एक छात्र को पहले उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाना चाहिए और उसके बाद राष्ट्रभाषा का परिचय दिया जाना चाहिए और जब वह रुचि और बुद्धिमत्ता का विकास करता है तो वह अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी सीख सकता है। उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा हमें दूसरों से जोड़ने का काम करती है, जिसपर विवाद नहीं किया जा सकता है।

गांधी जी का मानना था कि स्कूल या कॉलेज में छात्र क्या सीखता है और घर पर क्या अभ्यास करता है, इसके बीच वास्तव में कोई संबंध नहीं है। ये दोनों चीजें पैमाने के विपरीत हैं। इसके बजाय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्र जीवन की लड़ाई को सफलता प्राप्त करे। एनईपी के माध्यम से छात्रों के लिए व्यावसायिक एवं उच्च शिक्षा पर जोर देना है, ताकि छात्रों के लिए रोजगार को आसान बनाया जा सके। वह जीवन और दुनिया की समस्याओं के बारे में स्पष्ट और आलोचनात्मक तरीके से सोचने में सक्षम होना चाहिए और इसके समाधानों को विकसित करने में सक्षम होना चाहिए। (Careerindia Hindi Desk, 2022)[1]

2. <u>संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण</u>

डॉ. तयुंग, डी. (2019) ने गांधीवादी शिक्षा दर्शन के एक व्यापक अध्ययन पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते है कि गांधीवादी शिक्षा दर्शन आदर्श, किफायती होने के साथ–साथ अत्यंत व्यावहारिक और अपने अनुप्रयोग में सार्वभौमिक है। गाँधी जी सामान्य शिक्षा प्रदान करने की सर्वोत्तम प्रणाली प्रस्तुत करते है। जैसा कि गांधी स्वयं बताते हैं, विशेष योग्यताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रावधान किए जाने चाहिए। **(डॉ. तयुंग, डी., 2019)[2]** **राजश्री चंचल (2021)** ने अपने पत्र में शिक्षक शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए नई शिक्षा नीति 2020 की समीक्षा की। समीक्षा के पश्चात् इन्होंने पाया कि शिक्षा नीति 2020 न्यूनतम वित्तीय इनपुट और अन्य संसाधन आवंटन के साथ संरचनात्मक प्रणाली में परिवर्तन लाकर शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने का प्रयास करती है। देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के प्रमुख क्षेत्रों में से शिक्षक शिक्षा एक है। केवल योग्य शिक्षित और प्रशिक्षित शिक्षक ही राष्ट्र निर्माण में मदद कर सकते हैं और आर्थिक विकास में योगदान दे सकते हैं। इस पत्र में वे यह भी जांचती और चर्चा करती है कि कैसे नई शिक्षा नीति शिक्षक शिक्षा में भारी बदलाव लाने का प्रयास करती है और प्रदर्शन आधारित पदोन्नति और कार्यकाल जैसे प्रोत्साहनों का उपयोग करके शिक्षण पेशे में सुधार करने का प्रयास करती है। **(राजश्री चंचल, 2021)[3]** **टी, गॉर्डन (2021),** का शोध मुख्य रूप से रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन की विशेषताओं का विश्लेषण करता है, कैसे उनके शैक्षिक दर्शन ने प्रत्येक व्यक्ति को एक पूर्ण मानव बनाया और शिक्षा के क्षेत्र में नई सिफारिशें प्रदान की। यह शोध पूर्णतः सैद्धान्तिक आधारित था। अनुसंधान पद्धति के रूप में ऐतिहासिक पद्धति, विश्लेषणात्मक पद्धति और वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया था। शोध निष्कर्ष के अनुसार, रवींद्रनाथ टैगोर की शैक्षिक प्रणाली एक व्यक्ति को बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित कर सकती है।**(टी, गॉर्डन, 2021)[4]**

<u>महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार</u>

गांधीजी की आधारभूत शिक्षा उनके शिक्षा दर्शन का एक ज्वलंत प्रतिनिधित्व है। उनकी आधारभूत शिक्षा युवा छात्रों को नैतिक रूप से स्वतंत्र व्यक्ति, सामाजिक और आर्थिक रूप से उत्पादक और भविष्य के जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करने का कठिन कार्य करती है और युवाओं को शिक्षित करके बेरोजगारी की समस्या का समाधान करेगी और उन्हें स्वआश्रित बनाएगी। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा को बच्चे की सभी क्षमताओं का विकास करना चाहिए ताकि वह एक पूर्ण व्यक्ति बन सके। इस प्रकार, एक पूर्ण विकसित और सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, जो सत्य या ईश्वर है। गांधी ने स्वयं कहा था – ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चों और पुरुषों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से सर्वोत्तम गुणों के व्यापक विकास से है''। साक्षरता शिक्षा की शुरुआत है, अंत नहीं। यह सिर्फ एक साधन है। गांधीजी की शिक्षा के मुख्य सिद्धांतों में शामिल हैं :

- सात से चौदह वर्ष की आयु तक प्रत्येक बच्चे की शिक्षा निःशुल्क, सीमित और सार्वभौम हो।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होना चाहिए।
- शिक्षा से बच्चों में मानवीय मूल्यों का विकास होना चाहिए।
- शिक्षा को ऐसे लोगों का निर्माण करना चाहिए जो उपयोगी, जिम्मेदार और गतिशील हों। बच्चे की सभी छिपी हुई शक्तियों को शिक्षा के माध्यम से उस समुदाय के अनुसार विकसित किया जाना चाहिए जिसमें वह एक अभिन्न अंग है।
- शिक्षा को बच्चे के शरीर, मन, हृदय और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण विकास को प्राप्त करना चाहिए।
- शिक्षा को उत्पादक व्यवसायों या उद्योगों के माध्यम से वितरित किया जाना चाहिए, और उस उद्योग के साथ उपयोगी संबंध बनाए जाने चाहिए। उद्योग ऐसा होना चाहिए कि बच्चे व्यावहारिक कार्य के माध्यम से प्रभावी कार्य अनुभव प्राप्त कर सकें।
- शिक्षा को आर्थिक स्वतंत्रता और निर्वाह के लिए आत्मनिर्भरता की ओर ले जाना चाहिए। **(सुमन जी., डॉ. शर्मा आर. 2018)[5]**

<u>**महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा की परिभाषा**</u>

महात्मा गांधी ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया–

''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य मे निहित शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठतम शक्तियों का अधिकतम विकास है।'' (सलील सरोज, 2020)[6]

भारतीय जीवन को समृद्ध बनाने के लिए गांधी जी प्रयासरत थे। वे व्यक्ति, समाज और देश की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दासता का विरोध कर स्वतंत्रता एवं स्वावलम्बन के आकांक्षी थे। अतः वे शिक्षा को सार्वभौमिक रूप मे प्रसारित करना चाहते थे। उनका मानना था कि साक्षरता से न तो शिक्षा का आरम्भ होता है न ही अंत। यह केवल एक साधन मात्र है, जिसके द्वारा मनुष्य को शिक्षित किया जा सकता है।
महात्मा गांधी के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जिससे बालक की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों को विकसित किया जा सके। गांधी जी चाहते थे कि शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क, हृदय तथा आत्मा की सारी शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित हो। इन शक्तियों को समग्र एवं संतुलन की दृष्टि से विकसित किया जाना चाहिए। श्रम के प्रति निष्ठा एवं संतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों से ही नए भारत का निर्माण हो सकता है।

गांधी जी का शिक्षा दर्शन शारीरिक श्रम की नैतिकता पर आधारित है। इसे उपनिवेशवाद के आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभुत्ववादी शोषण के विरूद्ध विकल्प के रूप में विकसित किया गया। गांधी जी स्वतः स्फूर्त संवेदी तरीको से श्रमिकों की मानसिक दुनिया से जुड़े हुए थे। उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन का विकास ग्रामीण समाज में श्रमिकों के बच्चों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की लय के साथ किया। उनका शारीरिक श्रम पर बल अत्याधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही श्रमिकों की पूंजी होती है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया श्रम को विमानवीय बनाकर उसे खरीद और बिक्री की वस्तु बना देती है।

आधुनिक मशीनी सभ्यता गांधी जी की दृष्टि में अनैतिक थी जो अन्ततः विनाश की ओर ले जाती है। विनाश की इस प्रक्रिया को जड़ से समाप्त करने एवं भारत के नवनिर्माण हेतु उन्होंने बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। यह जनता की शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम था जिससे जनता को स्वराज हासिल हो।

आधारभूत शिक्षा या नई तालीम

दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के दौरान महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा–सिद्धान्त का विकास किया। टाल्स्टॉय आश्रम की स्थापना का उद्देश्य सर्वोदय के सिद्धान्त के अनुरूप भारतीयों का सहयोगपूर्ण जीवन था। गांधी जी ने स्वयं बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की। गांधी जी अपनी आत्मकथा में लिखते है कि अक्षर ज्ञान के लिए अधिक से अधिक तीन घंटे रखे जाने चाहिए। उनका आग्रह था कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। टाल्स्टॉय आश्रम की शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में वे शारीरिक श्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं, **"हम लोगों ने यह सुनिश्चित किया है कि सबको कोई न कोई धंधा सिखाया जाए। इसके लिए मि0 केलनबैक चप्पल बनाना सीख आए, उनसे मैंने सीखकर बालको को सिखाया। आश्रम में बढ़ई का काम जानने वाला एक साथी था इसलिए यह काम भी कुछ हद तक बच्चों को सिखाया जाता था। रसोई का काम तो लगभग सभी बालक सीख गए थे।"**

1937 में प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बनने पर शिक्षा का सारा भार गांधी जी एवं उनके शिष्यों के कंधो पर आ गया। कांग्रेसी सरकार शिक्षा के लिए पर्याप्त पैसे जुटाने में असफल हो रही थी क्योंकि मद्य– निषेध पर गांधी जी का अधिक बल था। टाल्स्टॉय आश्रम के अनुभव के आधार पर महात्मा गांधी शिक्षा को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। गांधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षण की प्रमुख विशेषताएं थी–

i. 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा।
ii. शिल्प या हस्त उद्योग को पूरी शिक्षण व्यवस्था के केन्द्र में रखना।
iii. बच्चों की शिक्षा के लिए मातृभाषा ही शिक्षण का माध्यम हो।
iv. शिक्षा के व्यय का वहन अध्यापकों एवं छात्रों द्वारा किए गए उत्पादन कार्यों से किया जाए ताकि शिक्षा स्वावलंबी हो सके।
v. हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा की शिक्षा पूरे भारतवर्ष में अनिवार्य हो।

स्पष्टतः गांधी जी ऐसी शिक्षा प्रदान करना चाहते थे जो लाभ प्रदान करने वाले उत्पादक कार्य के जरिए प्राप्त हो। आत्म–संतुष्टि को गांधी जी अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। शारीरिक परिश्रम के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी कहते है **''शारीरिक कार्य के प्रशिक्षण का उद्देश्य विद्यालय म्युजियम के लिए वस्तुंए बनाना या खिलौने बनाना नहीं होगा, जिसका कोई मूल्य न हो। इसका उद्देश्य ऐसी वस्तुंए बनाना होना चाहिए जो बेची जा सकें। बच्चे इसे फैक्टरी की शुरूआती दिनों की तरह नहीं करेंगे, जब वे चाबुक के डर से काम करते थे। वे इसलिए काम करेंगे क्योंकि इससे उनका मनोरंजन होता है और बौद्धिक प्रेरणा मिलती है।''(डॉ. पात्रा, जी., 2021)[7]**

महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1921 में यंग इंडिया पत्रिका के एक लेख में उन्होंने लिखा कि **''शिक्षा तीन उद्देश्य पूरा करेगी, शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाना, बच्चे के शरीर एवं दिमाग दोनों का ही विकास करना और विदेशी धागे और कपड़ों के बहिष्कार का रास्ता खोलना, इस प्रकार बच्चों को आत्मनिर्भर एवं स्वतंत्र बनने के लिए तैयार करना है।''** उनका कहना है कि, **''ऐसी शालाओं में हल जोतना बच्चों का खेल होगा''।** विद्यार्थियों को दूरगामी अहिंसक सामाजिक क्रांति का वाहक बनाने के लिए गांधी जी ग्रामीण हस्तशिल्प की शिक्षा देना चाहते थे। गांधी जी द्वारा शिक्षा के व्यापक उद्देश्य निश्चित किये गए जिन्हें दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है – वैयक्तिक उद्देश्य एवं सामाजिक उद्देश्य।

- **वैयक्तिक उद्देश्य**

i. चरित्र निर्माण – चरित्र निर्माण को महात्मा गांधी ने शिक्षा का उच्चतम लक्ष्य माना। चरित्र की मजबूत नींव के द्वारा विद्यार्थियों को अन्य सब बातें स्वतः सीखाई जा सकती है।

ii. सर्वांगीण विकास – केवल बौद्धिक विकास महात्मा गांधी के अनुसार विकलांगता का प्रतीक है। उन्होंने सर्वांगीण विकास के लिए तीन 'एच' की शिक्षा देना आवश्यक माना– हेड (मस्तिष्क), हैण्ड (हाथ) और हार्ट (हृदय)। इन तीनों की समन्वित शिक्षा ही व्यक्ति को उच्चतम विकास तक ले जा सकती है।

- **सामाजिक उद्देश्य**

i. **स्वावलंबी नागरिक का निर्माण–** महात्मा गांधी देश के हर व्यक्ति को शारीरिक श्रम द्वारा उत्पादन कार्य करते हुए देखना चाहते थे। मानव श्रम की शिक्षा देकर वे कुशल नागरिकों का निर्माण करना चाहते थे।

ii. **सर्वोदय समाज का विकास–** गांधी जी समाज के सभी व्यक्तियों को विकास का अवसर देने के पक्ष में थे। महात्मा गांधी का सपना समाज के निर्धनतम व्यक्ति का विकास था। वे इस क्रांतिकारी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा को शक्तिशाली साधन मानते थे।

iii. **ग्राम स्वराज की स्थापना–** गांधी जी केवल अंग्रेजी दासता से ही मुक्ति के साथ–साथ एक मानव द्वारा दूसरे मानव के शोषण की हर संभावना को समाप्त करना चाहते थे जिसके लिए वे ग्राम स्वराज की स्थापना करना चाहते थे। इस प्रकार महात्मा गांधी शिक्षा के द्वारा न केवल व्यक्ति वरन् समाज एवं राष्ट्र की समस्त बुराईयों को समाप्त करना चाहते थे।**(भोले, एल.एम., 2016)[8]**

टैगोर के शैक्षिक विचार

टैगोर ने शिक्षा का अर्थ अत्यन्त व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है। अपनी पुस्तक 'पर्सनालिटी' (Personality) में टैगोर ने लिखा है– **"उच्चतम शिक्षा वह है जो हमारे जीवन के सभी अस्तित्वों के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाती है।"**

सभी अस्तित्वों अर्थात् जीवों और वस्तुओं के साथ सामंजस्य एवं समरसता तभी सम्भव हो सकती है जबकि व्यक्ति की समस्त शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित हो जाएँ। इस स्थिति को ही टैगोर पूर्ण मनुष्यत्व मानते हैं और उनका कथन है कि इस पूर्ण मनुष्यत्व की प्राप्ति ही शिक्षा का उद्देश्य है। टैगोर यह कहते हैं कि केवल ज्ञानार्जन ही शिक्षा नहीं है बल्कि शिक्षा के द्वारा बालक में समस्त क्षमताओं का विकास होना चाहिए। उन्होंने सच्ची शिक्षा के द्वारा वर्तमान के सभी वस्तुओं में मेल और प्रेम की भावना विकसित करना चाहते थे। टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है। रूसो की भांति टैगोर भी प्रकृति को बालक की शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ साधन मानते थे। उन्होंने (टैगोर) लिखा है **"प्रकृति के पश्चात बालक को समाजिक व्यवहार की धारा के संपर्क में आना चाहिए।" (दास, एस., 2022)[9]**

टैगोर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

यद्यपि टैगोर ने रूसो या स्पेन्सर की भाँति शिक्षा पर कोई पुस्तक नहीं लिखी, परन्तु उनके लेखों, साहित्यिक रचनाओं, व्याख्यानों आदि के द्वारा उनकी शिक्षा के उद्देश्य पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाते हैं। टैगोर शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वाङ्गीण विकास मानते हैं। यहाँ हम इसी तथ्य को अधिक विस्तार से स्पष्ट करेंगे।

i. **शारीरिक विकास–** टैगोर यह मानते है कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का शारीरिक विकास है। बालक का शारीरिक विकास तभी हो सकता है, जब उसे प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में खेलने–कूदने, उठने–बैठने और अध्ययन करने की सुविधा प्रदान की जाय। टैगोर किताबी शिक्षा के शारीरिक विकास को अधिक महत्त्व प्रदान करते हैं। उन्होंने लिखा है, **"पेड़ों पर चढ़ने, तालाबों में डुबकियाँ लगाने, फूलों को तोड़ने और बिखेरने और प्रकृति माता के साथ नाना प्रकार की शैतानियाँ करने से बालकों को शरीर का विकास, मस्तिष्क का आनन्द और बचपन के स्वाभाविक आवेगों की संतुष्टि प्राप्ति होती है।"**

   इससे स्पष्ट है कि टैगोर की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शारीरिक विकास है क्योंकि शारीरिक विकास के बिना मानसिक विकास व्यर्थ है।

ii. **मानसिक अथवा बौद्धिक विकास–** टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास के साथ ही मानसिक या बौद्धिक विकास है। पुस्तकों से सहायता प्राप्त करना मानसिक विकास का केवल एक अंग

मात्र है। वास्तविक मानसिक विकास प्रकृति एवं जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करना ही हो सकता है। टैगोर ने लिखा था, **"पुस्तकों की बजाय प्रत्यक्ष रूप से जीवित व्यक्तियों को जानने का प्रयास करना शिक्षा है। इससे न केवल कुछ ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि इससे जानने की शक्ति का विकास होता है, जितना कक्षा में सुने जाने वाले व्याख्यानों से होना असम्भव है। यदि हमारे मस्तिष्क संवेगों और कल्पना की वास्तविकता से पृथक कर दिये जाते हैं, तो वे निर्बल तथा विकृत हो जाते हैं।"**

iii. **संवेगात्मक विकास–** टैगोर शिक्षा का उद्देश्य शरीर और मन के विकास के साथ ही संवेगों का विकास भी मानते हैं। उनका मत था कि संगीत, चित्रकला और कविता आदि के द्वारा बालक को संवेगात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे उसमें सहानुभूति, प्रेम, दया, परोपकारिता आदि की भावना उत्पन्न हो सके।

iv. **जीवन से सामंजस्य की क्षमता का विकास–** टैगोर का मत था कि शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि बालक जीवन की परिस्थितियों के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित कर सके। यदि शिक्षा जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित कराने में समर्थ नहीं है तो वह व्यर्थ है। टैगोर ने लिखा था, **"इस समय हमारा ध्यान चाहने वाली प्रथम और महत्त्वपूर्ण समस्या हमारी शिक्षा और हमारे जीवन में सामंजस्य स्थापित करने है।"**

v. **सामाजिक विकास–** टैगोर शिक्षा का उद्देश्य बालक के वैयक्तिक विकास के साथ ही उसका सामाजिक विकास भी मानते हैं। यद्यपि वह प्रकृति के स्वतन्त्र वातावरण में शिक्षा प्रदान करने के समर्थक हैं, परन्तु इसके साथ ही वह यह भी कहते हैं कि बालक में सामाजिक गुणों का विकास करना भी शिक्षा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। शिक्षा बालक में इस प्रकार सामाजिक गुणों का विकास करने में समर्थ नहीं होती यह वास्तविक शिक्षा नहीं है।

vi. **नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास–** टैगोर ने शिक्षा के नैतिक एवं आध्यात्मिक उद्देश्य को भी महत्त्व प्रदान किया है। उनका कथन है कि शिक्षा बालकों में नैतिक गुणों का विकास करने में समर्थ होनी चाहिए। टैगोर सही नैतिक शिक्षा उस शिक्षा को मानते हैं, जिसमें आध्यात्मिकता का भी पुट हो। अनुशासन, शान्ति और धैर्य आदि मानव के अन्तर्गत आवश्यक हैं। उसमें आत्म–निर्णय और आत्मानुशासन की क्षमता होनी चाहिए। यह बातें शिक्षा के द्वारा ही लाई जा सकती हैं। टैगोर का मत था कि नैतिकता और आध्यात्मिकता ही व्यक्ति की उन्नति की कसौटी है और इन गुणों का विकास शिक्षा के द्वारा ही होना चाहिए। मानव, मानव इसीलिए है कि इसमें नैतिकता और आध्यात्मिकता की भावना होती है। यदि शिक्षा बालकों में नैतिक गुणों का विकास करने में समर्थ न हो और उनमें आध्यात्मिक भावना न ला सके, तो वह शिक्षा व्यर्थ है। **(मंडल, पी. के. 2019)**[10]

कोविड 19, महामारी ने जीवन को एक डरावने पड़ाव पर ला दिया था। सम्पूर्ण विश्व स्वास्थ्य, आर्थिक और शैक्षिक चुनौतियों का सामना कर रहा था। कोविड दोबारा होने की आशंका, नाजुक स्वास्थ्य प्रबंधन और एक संघर्षरत आर्थिक गतिविधि के बावजूद, लोग जीवन के धागों को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन चिंता की सूची में सबसे ऊपर की बात है – शिक्षा के पुनर्निर्माण। शिक्षा का रुकना, शिक्षा की हानि, वर्ष भर घर में रहना, सामाजिक–भावनात्मक कल्याण पर गंभीर दबाव कोविड महामारी के दुष्प्रभाव को बढ़ाते हैं। कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षा में बैठने वाले छात्र अनिश्चितता, भय और संभावनाओं से जूझ रहे थे।
इस संकट के बीच जुलाई 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा हुई। हालांकि यह नीति लंबे समय से प्रतीक्षा सूचि में थी, महामारी के दौरान इसकी घोषणा ने इसे शिक्षा, संस्थानों के पुनर्निर्माण और वर्षों से संचित विकृतियो को सही करने के लिए एक अवसर के रूप में प्रकट किया। सभी को आजीवन को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का अंतर्राष्ट्रीय दायित्व, और संयुक्त राष्ट्र के एसडीजी लक्ष्यों, 1.3 बिलियन लोगों के निवास वाले राष्ट्र के लिए एक नीति तैयार करने के लिए अनिवार्य थे। और इस नीति का विजन एक ऐसा इको–सिस्टम बनाना है जो उत्कृष्टता, नवाचार की संस्कृति और उच्च गुणवत्ता वाली मानव पूंजी को बढ़ावा दे।
नीति के अन्य मुख्य आकर्षण में उच्च–क्रम की संज्ञानात्मक क्षमताएं, मूलभूत साक्षरता, संख्यात्मकता और डिजिटल क्षमताएं शामिल हैं। शिक्षार्थियों के बीच भारतीय होने का गहरा गर्व पैदा करना, ज्ञान, कौशल, मूल्य और स्वभाव विकसित करना जो मानव अधिकारों, सतत विकास और वैश्विक नागरिक के लिए जिम्मेदार प्रतिबद्धता का समर्थन करते हैं, इस नई शिक्षा नीति कीरवींद्रनाथ टैगोर के दर्शन के साथ इन नीतिगत विशेषताओं के सम्बन्धो की चर्चा करने पर हमे ज्ञात होता है कि किस प्रकार टैगोर के शैक्षिक विचार नई शिक्षा नीति का मार्ग प्रशस्त करते है। टैगोर ने एक बार कहा था, **''एक बच्चे को अपनी शिक्षा तक सीमित न रखें क्योंकि वह किसी अन्य समय में पैदा हुआ था।''** उनके अनुसार, **''शिक्षा का अर्थ मन को उस परम सत्य का पता लगाने में सक्षम बनाना है जो हमें धूल के बंधन से मुक्त करता है और हमें चीजों का नहीं बल्कि आंतरिक प्रकाश का, शक्ति का नहीं बल्कि प्रेम का धन देता है। यह ज्ञान की एक प्रक्रिया है, दैवीय धन जो सत्य की प्राप्ति में मदद करता है''।**

टैगोर की वास्तु योजना में, बच्चे को प्राकृतिक वातावरण में पोषित करने और उसकी शिक्षा सुनिश्चित करने पर बल दिया जाता है। छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना, भयमुक्त होकर खुद को व्यक्त करना, प्रयोग करना और गलतियाँ करना और उनकी विशिष्टता को पहचानना शिक्षा के मूल में है। इस प्रकार, टैगोर इस बात की पुष्टि करते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य स्वतंत्र प्रयास, जिज्ञासा और मन की सतर्कता के माध्यम से विचारों को प्राप्त करना होना चाहिए। शिक्षा को केवल इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं को सेकेंडों में याद रखने या संग्रहीत करने के बजाय सोच, कल्पना और रचनात्मकता का विकास करना

चाहिए। शिक्षा नीति के दस्तावेज़ और रवींद्रनाथ टैगोर के लेखन और भाषणों से हमें जो अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, उसे पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह नीति टैगोर के विचारो से कितनी प्रेरणा लेती है। नीचे दी गई तालिका उन प्रेरणाओं का सारांश प्रस्तुत करती है–

कमांक	रवींद्रनाथ टैगोर के आदर्श	नई शिक्षा नीति 2020 सार
1	प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा जहां बच्चे को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता हो	बच्चे का समग्र विकास (इसका उद्देश्य शिक्षा को रट कर सीखने से दूर वास्तविक शिक्षा की ओर ले जाना है)
2	पैदल–भ्रमण और गतिविधि पद्धति के दौरान शिक्षण में विश्वास	अनुभवात्मक सीखने और समस्या–समाधान के दृष्टिकोण पर केंद्रित है
3	उन्होंने कला, संगीत, चित्रकला, बागवानी को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल दिया।	विषयों में लचीलापन (विषयों की व्यापक पसंद)
4	टैगोर का मानना था कि लोगों के लिए अपनी भाषा सीखना शुरू करना महत्वपूर्ण है। इस तरह, वे अपनी विरासत पर गर्व कर सकते हैं। साथ ही, उन्होंने सोचा कि अन्य संस्कृतियों से सीखने के भी लिए बहुत कुछ है। वह पूर्व और पश्चिम के बीच संश्लेषण को प्रोत्साहित करते है।	कोई भाषा बाधा नहीं (5 वीं कक्षा तक क्षेत्रीय भाषा में अध्ययन)
5	टैगोर ने शिल्प और कला गतिविधियों को महत्व दिया क्योंकि ये गतिविधियाँ आर्थिक स्वतंत्रता देती हैं और ग्रामीण जीवन में सुधार करती हैं।	कौशल आधारित शिक्षा पर ध्यान देंय स्कूलों में व्यावसायिक विषय होना चाहिए।
6	बच्चों को राष्ट्रीय संस्कृति के आदर्शों और मूल्यों से परिचित कराना चाहिए।	भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देना
7	शिक्षक को नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक मूल्यों का मूर्त रूप होना चाहिए। उसे आजीवन शिक्षार्थी बने रहना चाहिए।	शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर विशेष जोर।

3. <u>समस्या कथन</u>

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के लिए **''महात्मा गांधी एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन के आलोक में नई राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन''** समस्या का चयन किया हैं।

4. <u>अध्ययन की आवश्यकता और महत्व</u>

टैगोर और गांधी दोनों ने शिक्षा को उत्तर–औपनिवेशिक दृष्टिकोण से देखा। उनके प्रयोगों ने भारत की राष्ट्रीय विरासत – वेदों और उपनिषदों की मुहर लगा दी। टैगोर की योजना, आधुनिक भारत में प्राचीन आश्रम सिद्धांतों के एक भाग का प्रत्यारोपण करना था जहां छात्र और शिक्षक पारिवारिक बंधन में एक साथ रह सकते है। जहाँ इंसान और प्रकृति दोनों के साथ सीखना समन्वय की भावना के साथ होगा। कला, साहित्य और संगीत के क्षेत्र में प्रदर्शन के माध्यम से बच्चों का व्यक्तित्व विकसित होगा।

गांधी ने भी प्राचीन भारतीय प्रथाओं का आह्वान किया। पूर्वकाल में बच्चा अपने माता–पिता से परिवार में प्रचलित व्यापार को सीखता था। सीखने की मुख्य गतिविधि के रूप में, इसे वह कला, विशेष रूप से साहित्य को हर्षित तरीके से सीखेगा। कार्य करना बच्चे को सामाजिक रूप से जिम्मेदार और कलात्मक रूप से रचनात्मक बना देगा। उनका व्यक्तित्व समय और अनुभव के साथ विकसित होगा। गांधी का अंतर्निहित सिद्धांत यह था कि स्वयं के प्रति, परिवार और समुदाय के प्रति जीवन एक कर्तव्य है। गांधी की शिक्षा की अवधारणा न केवल निरक्षरता का उन्मूलन है बल्कि ष्करके सीखनाष और सादा जीवन, उच्च विचार के सिद्धांत का प्रचार भी करती है। उनकी शिक्षा प्रणाली शांतिपूर्ण संस्कृति, ईमानदारी से काम, राष्ट्र के लिए समर्पण, सामाजिक सोच, मित्रता, सही भावना, आर्थिक उन्नति, शारीरिक सुधार और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रगति पर बल देती है। यह कार्य–केंद्रित शिक्षा पर आधारित है जो आवश्यक आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान कर सकती है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा का दर्शन मनुष्य, प्रकृति और ईश्वर का सम्मिश्रण है, जो मूल रूप से किसी भी समय, समाज के प्रकार, नृवंशविज्ञान या धर्म तक सीमित नहीं है। उनके सिद्धांतों को किसी भी समय किसी भी भौगोलिक स्थिति में पुनर्जीवित या पुनरू स्थापित किया जा सकता है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर इसके कार्यान्वयन के लिए एक बहुत बड़े सुधार–आंदोलन की जरूरत है क्योंकि स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में 75 वर्षों के बाद भी इसे व्यावहारिक रूप से पुनर्जीवित नहीं किया जा सका है।

महात्मा गांधी तथा रवींद्रनाथ टैगोर दोनों शिक्षा को मानवीय मस्तिष्क तथा चेतना के विकास के एक उपकरण के रूप में देखते थे तथा उनका मानना था कि साक्षर होने या केवल लिखने–पढ़ने की प्रक्रिया

को ही शिक्षा नहीं माना जा सकता है। महात्मा गांधी का मानना था कि औपनिवेशिक शिक्षा ने भारतीयों के मस्तिष्क में हीनता की भावना का विकास किया है। इस कारण वे पश्चिमी संस्कृति को श्रेष्ठतर समझने लगे और उनमें अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना समाप्त हो गई। उन्होंने इस बात पर अत्यधिक बल दिया कि शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा होनी चाहिए, क्योंकि अंग्रेज़ी शिक्षा जन सामान्य को एक दूसरे से जोड़ नहीं पाती। उनके विचार में पश्चिमी शिक्षा वास्तविक अनुभवों तथा व्यावहारिक ज्ञान की बजाय पढ़ने और लिखने (अर्थात् सैद्धांतिक ज्ञान) पर केन्द्रित थी तथा इस कारण इसमें कौशल विकास का अभाव है।

टैगोर के अनुसार, बाल्यावस्था में विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के कठोर तथा सीमाबद्ध अनुशासन के बजाय स्व–अध्ययन पर जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षक को बालक को समझने हेतु अधिक कल्पनाशील होना चाहिए ताकि वह उनकी जिज्ञासाओं को विकसित करने में सहायता कर सके। उनके विचार में रचनात्मक शिक्षा को केवल प्राकृतिक परिवेश में ही प्रोत्साहित किया जा सकता है। जहां तक प्रत्येक समुदाय के सामाजिक क्षेत्र का संबंध है, शैक्षिक अवसर और विकास सांप्रदायिक प्रगति के लिए हर पहलू में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक समाज में जितने अधिक शिक्षण संस्थान होंगे, उसकी मानसिकता उतनी ही अधिक शिक्षित और परिष्कृत होगी। समाज के बुद्धिजीवी ही समाज के सैद्धांतिक पहलुओं की रचना करते हैं जबकि शासक इन सिद्धांतों को लागू करने और उन्हें वास्तविकता में सच करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर ऐसे ही प्रमुख व्यक्तित्व हैं जिन्होंने राष्ट्र का प्रारूप तैयार किया और उसमें रहने वाले लाखों लोगों की भलाई के लिए योगदान दिया। वास्तव में, इस जोड़ी की शैक्षिक अवधारणाएं और सिद्धांत आज भी इक्कीसवीं सदी में लागू की गई शैक्षिक नीतियों का मूल मसौदा हैं।

महात्मा गांधी तथा रवींद्रनाथ टैगोर दोनों शिक्षा को बालक के सर्वांगिक विकास के लिए आवश्यक मानते है। दोनों के अनुसार शिक्षा का कार्य केवल अक्षरों का ज्ञान अथवा पूर्व निश्चित आधारहीन लक्ष्यों की प्राप्ति ही नहीं है बल्कि बच्चों में चेतना को जागृत करना है, उनमें खोजी प्रवृत्ति का विकास करना है ताकि अपने समुदाय, समाज, देश, अपने आस–पास के वातावरण आदि के प्रति वे सजग रह सके और उसकी उन्नति तथा समृद्धि के लिए कार्य कर सके। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा ‘‘महात्मा गांधी एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन के आलोक में नई राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन’’ किया जाएगा।

5. <u>अध्ययन के उद्देश्य</u>

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य होंगें:

i. महात्मा गांधी के शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन करना।

ii. रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन करना।

iii. महात्मा गांधी एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन की समानताओं एवं भिन्नताओं का अध्ययन करना।

iv. नई राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन करना।

v. महात्मा गांधी के शैक्षिक चिंतन के आलोक में नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन करना।

vi. रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक चिंतन के आलोक में नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन करना।

vii. महात्मा गांधी एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन के आलोक में नई शिक्षा नीति 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

6. अध्ययन क्षेत्र

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन मनुष्य के शरीर,मन तथा आत्मा का सर्वागीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से अभिप्रेरित हैं। महात्मा गांधी जी के अनुसार शिक्षा वह है जो बालक के शरीर , मन और आत्मा का विकास करें। गांधी जी मनुष्य जीवन का अंतिम उद्धेश्य मुक्ति को मानते मुक्ति से तात्पर्य शारिरीक, मानसिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिकता से मानते है। महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन में गांधी जी ने शिक्षा को 3R और 3H की संज्ञा दी थी। 3R से उनका आशय Reading, Writing, Arithmetic से था, अर्थात (अंको का ज्ञान) और 3H से उनका आशय Hand, Head, Heart से था (शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक का शारीरिक मानसिक और बौद्धिक विकास करें।

वही दूसरे ओर टैगोर ने भी गांधी के समान तत्कालीन शिक्षा सम्बन्धी समस्याओ पर प्रकाश डाला। 1906 में उन्होंने **"शिक्षा की समस्याएं"** विषय पर अपने एक संबोधन में स्कूलों को शिक्षा की फैक्ट्री का दर्जा देते हुए कहा कि फैक्टरियों में किताबी ज्ञान और तोता प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता हैं जबकि व्यवहारिक और रचनात्मक पहलू पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। उनका कहना था कि विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भारतीय महापुरुषों एवं दर्शन के प्रमुख विचारों को स्थान दिया जाना चाहिए और यह राष्टीयता की विचारधारा पर आधारित हो, शिक्षा का कोई भी राष्ट्रीय प्रणाली विदेशी मॉडल पर आधारित नहीं हो। इसका तात्पर्य है जो देशवासियों के अंदर संचित मूल्यों, परंपराओं, प्रथाओ, गौरवपूर्ण आदर्शों से स्वाभाविक रूप से विकसित कर सके, भारत को ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है. इसके लिए बच्चों में सामाजिक संवेदना, जन कल्याण की भाव जागृति, नैतिक आदर्शों की प्रेरणा समेत देशज परंपराओं, प्रथाओं और रीति–रिवाजों के ज्ञान के लिए उन्हें राष्ट्र की मौलिक शिक्षा देना जरूरी है। महात्मा गाँधी और रबिन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन से ही प्रभावित होकर नई शिक्षा नीति में भी केवल सैद्धांतिक शिक्षा को अनुचित ठहराते हुए व्यावहारिक, वैज्ञानिक, खोजपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के लिए अनुशंसा की है ताकि विद्यार्थियों में कौशल विकास के साथ साथ एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी विकसित किया जा सके। इस अध्ययन में छात्रों की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं, आवश्यकताओं आदि की पूर्ति के लिए काफी संभावनाऐं है।

7. शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधत्री द्वारा ऐतिहासिक तथा दार्शनिक शोध विधि का उपयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है।

सर्वेक्षण अध्ययन –

शब्द सर्वेक्षण (Servey) की उत्पत्ति शब्दों ''Sur'' या ''Sor'' तथा ''Veeir'' या ''Veior'' से हुई है जिसका अर्थ क्रमशः 'ऊपर से' और 'देखना' होता है। सामान्यतः सर्वेक्षण 'वर्तमान में क्या रूप है?' इससे सम्बन्धित है। वर्तमान में क्या स्वरूप है ? इसकी व्याख्या एवं विवेचना करता है। इसका सम्बन्ध परिस्थितियां या सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, कार्य जो हो रहा है, प्रक्रिया जो चल रही है, से होता है। सर्वेक्षण अध्ययन के द्वारा हम तीन प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा **वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) पद्धति** का प्रयोग किया गया जाएगा। यह वर्णनात्मक शोध अध्ययनों में सबसे लोकप्रिय विधि के रूप में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधि है। यह विधि वर्तमान स्थिति के महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन, विश्लेषण और विचारों के संदर्भ में जानकारी एकत्र करने में सहायक होगी (कोठारी, 2004)।

8. सूचना के प्रारंभिक स्त्रोत

उद्‌देश्य प्राप्ति हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध में मुख्यतः भारतीय शैक्षिक दर्शन, गांधी का शैक्षिक दर्शन, टैगौर का शैक्षिक दर्शन तथा नई शिक्षा नीति 2020 संबंधित दस्तावेज़, पुस्तकों, व्याख्यानों एवं विचारों का संकलन किया गया है।

9. द्वितीय स्त्रोत

ऑनलाईन स्त्रोत, शिक्षा दर्शन, गांधी के शैक्षिक दर्शन, टैगौर के शैक्षिक दर्शन तथा नई शिक्षा नीति 2020 से संबंधित पत्र–पत्रिकाएं, पूर्व के शोध–पत्र, शोध प्रबंध, पूर्व शोधकर्ताओं से विचार–विमर्श आदि।

10. अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन महात्मा गांधी एवं रविन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक चिन्तन के आलोक में नई राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

11. अध्याय योजना

अध्याय–1: प्रस्तावना

1.1 शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

1.1.1 शिक्षा का संकुचित अर्थ

1.1.2 शिक्षा का व्यापक अर्थ

1.2 भारत में शिक्षा नीतियों का इतिहास

1.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968

1.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

1.5 कार्य–योजना 1992

1.6 नई शिक्षा नीति 2020

अध्याय–2: संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

अध्याय–3: शैक्षिक अनुसंधान की विधि एवं प्रक्रिया

अध्याय–4: महात्मा गांधी का शैक्षिक चिंतन

अध्याय–5: रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक चिंतन

अध्याय–6: महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक चिंतन में समानता एवं भिन्नताएं

अध्याय–7: नई शिक्षा नीति 2020 का शैक्षिक चिंतन

अध्याय–8: महात्मा गांधी के साहित्य में प्रतिबिम्बित शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी साहित्य की विवेचनोपरान्त नई शिक्षा नीति 2020 की समीक्षा

अध्याय–9: रविन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य में प्रतिबिम्बित शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी साहित्य की विवेचनोपरान्त नई शिक्षा नीति 2020 की समीक्षा

अध्याय–10: महात्मा गाँधी तथा रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक चिंतन के आलोक में नई शिक्षा नीति 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन

अध्याय–11: शोध के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता तथा भावी शोध हेतु सुझाव

<u>संदर्भ ग्रन्थ सूची</u>

[1] https://hindi.careerindia.com/features/mahatma-gandhi-s-principles-on-new-education-policy-002555.html

[2] डॉ. तयुंग, डी. (2019), गांधीवादी शिक्षा दर्शन का एक व्यापक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशंस, खंड 9, अंक 12, आईएसएसएन 2250—3153, पृष्ठ सं.704—707

[3] **Chanchal, Rajshree. (2021). New Education Policy 2020 and Teacher Education. ducation India Journal: A Quarterly Refereed Journal of Dialogues on Education, ISSN 2278-2435, Vol. 10, Issue-2, Page no.365-363.**

[4] T, Gorden (2021), Rabindranath Tagore's Educational Philosophy in Contemporary Indian Society. Proceedings of the 12th International Conference on Business & Information.

[5] सुमन जी., डॉ. शर्मा आर. (2018), महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार और उसके विभिन्न आवश्यक उपागमः बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण और सम्यक विकास, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, 14(2)1790—1796

[6] सलील सरोज (2020), शिक्षा का उद्देश्य, साहित्य सिनेमा सेतु, आईएसएसएनः 2584—0819 retrieved from https://sahityacinemasetu.com

[7] डॉ. पात्रा, जी. (2021), महात्मा गांधी का शैक्षिक और सामाजिक दर्शन, बीएफसी प्रकाशन, आईएसबीएनः 9789391031657, 939103165X, पृ. सं. 65—85

[8] भोले, एल.एम., (2016), महात्मा गांधी और विनोबा भावे का शैक्षिक दर्शन, आईएसबीएन—13: 9788175418806, पृ. सं. 88—97

[9] दास, एस. (2022), रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शनः भारतीय शिक्षा में योगदान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फूड एंड न्यूट्रिशनल साइंसेज, आईएसएसएनः 2319—1775, खंड 11, अंक—12, पृ. संख्या 8750—8756

[10] मंडल, पी. के. (2019), रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार और वर्तमान शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च, खंड—6, अंक—3, आईएसएसएनः 2349—5162, पृष्ठ संख्या 1—8